पुत्र पिता की सामर्थ के रूप में

हमने कुछ समय मसीह के परमेश्वर की बुद्धि होने पर विचार करने में बिताया है। मसीह के पूर्व अस्तित्व से संसार की रचना में परमेश्वर की झलक मिलती है। यद्यपि पुराने नियम के लोगों ने सृष्टि की रचना में परमेश्वर की बुद्धि की भूमिका के विषय में बहुत कुछ बताया था, परन्तु उन्होंने कभी भी ''परमेश्वरत्व में दूसरे व्यक्ति'' के बारे में बात नहीं की थी। दूसरी ओर, नये नियम में ऐसे कथन हैं जिनका या तो अर्थ निकलता है कि *मसीह परमेश्वर की बुद्धि है जो समय से पूर्व था और जिसने सृष्टि की रचना में योगदान दिया* या इसकी स्पष्ट घोषणा है।

अब हम परमेश्वर पुत्र के अध्ययन के दूसरे क्षेत्र में आते हैं। यह खोज मसीह के परमेश्वर के वचन के रूप में देहधारी होने से पहले या बैतलहम में उसके जन्म से पूर्व की श्रेणी में आती है। पिछले पाठ की तरह, हम नये नियम में भी इससे सम्बद्ध पदों पर विचार करेंगे। सृष्टि की रचना में परमेश्वर के वचन से सम्बन्धित जानकारी लेकर, इस विषय पर सीखने के लिए हम पुराने नियम में देखेंगे।

नये नियम की शिक्षा

नये नियम में, मत्ती तथा लूका रचित समानांतर सुसमाचार[1] पर जोर देते हैं कि यीशु के जन्म से संसार में परमेश्वर के स्वयं आने का संदेश दिया गया है। मत्ती ने यीशु का परिचय इम्मानुएल के रूप में करवाया था जिसका अर्थ है ''परमेश्वर हमारे साथ।'' लूका उसे ''परमेश्वर के पुत्र'' के रूप में बताता है। दोनों ही पुस्तकें पवित्र आत्मा से बालक-मसीह के कुंवारी मरियम के गर्भ में आने की बात करती हैं (मत्ती 1; लूका 1)।

''आदि में''

यूहन्ना सुसमाचार का आरम्भ अलग ढंग से करता है। प्रस्तावना (यूहन्ना 1:1-18) में वह यीशु के जन्म का विवरण नहीं देता है। उसकी पुस्तक में मत्ती और लूका की तरह यीशु की वंशावली नहीं दी गई है (मत्ती 1; लूका 3)। इसके बजाय, एक प्रारम्भिक कथन है जो दिमाग़ को चौंका देता है! यूहन्ना 1:1 का आरम्भ उस वाक्यांश अर्थात ''आदि में'' से होता है जिसमें समय के पार की गूंज है।[2] एकदम हमें उत्पत्ति 1:1 का ध्यान आता है।[3]

आइए ''आदि में'' वाक्यांश को बार-बार बोलकर दोहराएं। ऐसा करने पर तुरन्त एक प्रश्न ध्यान में आता है कि ''किस बात का आदि?'' बाइबल में परमेश्वर के बारे में हमारे पास यदि उत्पत्ति 1:1 और यूहन्ना 1:1 दो वाक्यांश ही होते, तो हम आसानी से निष्कर्ष निकाल सकते थे कि लेखक परमेश्वर के आदि अर्थात आरम्भ की बात कर रहे थे। परन्तु, पवित्र शास्त्र के मुख्य विषयों में से एक परमेश्वर का *अनन्तकाल से* अस्तित्व होना है। इसलिए, हम इस बिंदु पर बाइबल की व्याख्या के उत्कृष्ट नियमों में से एक को लागू करते हैं: *कभी भी किसी अस्पष्ट पद की व्याख्या न करें जिससे उसी विषय पर किसी और पद में बाइबल की स्पष्ट शिक्षा का विरोध होता हो।* इस प्रकार से हम निष्कर्ष निकालते हैं कि उत्पत्ति 1:1 और यूहन्ना 1:1 में ''आदि'' का अर्थ परमेश्वर का रचनात्मक कार्य है, न कि उसके अपने अस्तित्व का आरम्भ। इस कारण, अंग्रेजी के अनुवादों में शब्द से पहले उप पद ''the'' *लगाया* गया है जो स्पष्ट कर देता है कि यह आदि समय की ओर संकेत है न कि परमेश्वर के आरम्भ की ओर।

उत्पत्ति 1:1 में कहा गया है, ''आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।'' यह कथन संसार की सृष्टि के विषय में व्यापक रूप से जानकारी देता महसूस होता है। इसके बाद सृष्टि की रचना के काम को विस्तार से बताया गया है। परन्तु, हमें चाहिए कि सृष्टि की रचनात्मक प्रक्रिया में परमेश्वर के *सम्बन्ध* और उस सम्बन्ध में पूरी सृष्टि में शामिल सब बातों पर ध्यान दें।

यूहन्ना 1:1-3 संसार की सृष्टि में मसीह के काम का अद्‌भुत कथन है:

> आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।

वचन परमेश्वर *था*; वचन परमेश्वर *के साथ* था। सब कुछ उसी के *द्वारा* बनाया गया है। इससे पहचान, सम्बन्ध तथा काम करने का पता चलता है। इस संक्षिप्त कथन में, एक विरोधाभास मिलता है कि जटिलता में परमेश्वर की सादगी है।

लोगोस[4]

सृष्टि के प्रारम्भ में *लोगोस* (वचन) था। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ के समय वचन था, इसलिए वचन सृष्टि के प्रारम्भ से *पहले* था। क्या कोई बढ़ई *पहले उस स्थान पर हुए* बिना मकान बना सकता है जहां मकान बनाया गया है? वचन के पूर्व अस्तित्व की बात बिल्कुल स्पष्ट है। वह वहां था। वचन परमेश्वर *के साथ* था। यह सम्बन्ध की बात बताता है।[5] सृष्टि की रचना की प्रक्रिया में पहले से अस्तित्व वाले वचन अर्थात शब्द का सम्बन्ध किससे था? इब्रानियों 1:2 कहता है, ''... [परमेश्वर ने] हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, ... उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है'' (इब्रानियों 2:9 भी देखिये)। फिर तो, यह पिता/पुत्र का सम्बन्ध है

जो उसके देहधारी होने से पहले था। बाद में, हम इस पुत्र को देहधारी होने के समय छुटकारा दिलाने के काम में यीशु के रूप में देखते हैं। परन्तु, हमें ध्यान में रखना चाहिए कि पिता और पुत्र के रूप में परमेश्वर का अस्तित्व अनन्तकाल से है और वह देहधारी होने से ही नहीं बनता है।

क्या इब्रानियों 1:2 में ''[परमेश्वर ने] हम से पुत्र के द्वारा बातें की'' कथन का अर्थ यह है कि अपने पूर्व अस्तित्व में वह वचन सचमुच ईश्वरीय था? क्या परमेश्वर का पुत्र ईश्वरीय हो सकता है? इसका उत्तर इस संदर्भ पर निर्भर करता है कि संदर्भ क्या है। उदाहरण के लिए पौलुस ने यह समझाने के लिए कि परमेश्वर के लोग ''जीवित परमेश्वर के पुत्र हैं'' रोमियों 9:26 में होशे 1:10 का इस्तेमाल किया था, परन्तु इन कथनों से कोई भी यह निष्कर्ष नहीं निकालेगा कि परमेश्वर का ''पुत्र'' स्वर्गीय जीव है।

परन्तु, यदि कोई संदेह है कि वचन के रूप में देहधारी होने से पूर्व परमेश्वर का पुत्र, ईश्वरीय था, तो हमें केवल इब्रानियों 1:8क पढ़ने की आवश्यकता है: ''परन्तु [परमेश्वर] पुत्र से कहता है, कि हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा।'' इब्रानियों की पत्री की दूसरी बहुत सी आयतों की तरह, यह आयत पुराने नियम से उद्धृत की गई है। यह आयत भजन संहिता 45 (पद 6) से ली गई है। यह विवाह का राजसी भजन है जो इब्रानी राजाओं के विवाह समारोह में गाया जाता था। इस भजन के सम्बन्ध में तीन तथ्य हमारी सोच के लिए केन्द्रित हैं: (1) राजा स्पष्ट रूप से दाऊद के राज घराने का है। (2) इस भजन में दाऊद या उसके किसी वंशज में केवल आंशिक रूप से पूरा होना ही मिलता है। (3) नये नियम के इब्रानियों की पत्री के लेखक द्वारा मसायाह के लिए इसकी प्रासंगिकता चौंकाने वाले ढंग से इसके सम्पूर्ण प्रभाव को दिखाती है! इब्रानियों की पत्री में, भजन संहिता 45:6, 7 को दाऊद की शाही वंशावली अर्थात मसायाह के पूरा होने के रूप में लागू किया गया है। इसे परमेश्वर पिता द्वारा (आयत 5) पुत्र को (आयत 8) परमेश्वर कहते हुए व्यक्तिगत सम्बोधन के रूप में दिखाया गया है![6]

इसलिए, हम देखते हैं कि परमेश्वर और यूहन्ना 1:1–3 में बताया गया सम्बन्ध वास्तव में पिता/पुत्र का सम्बन्ध है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पिता तथा मनुष्य बनने से पूर्व पुत्र दोनों ही परमेश्वर हैं। इसलिए संसार की रचना के बारे में बाइबल की प्रत्येक आयत में परमेश्वर का अनन्त पिता/पुत्र का सम्बन्ध मिलता है। यूहन्ना की बात सत्य है, ''वचन [*लोगोस*] परमेश्वर था। ... सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ है, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।''

सम्पूर्ण नये नियम में यह समझाया गया है कि परमेश्वर की सामर्थ से सब वस्तुओं की रचना की गई थी। परन्तु *यह पूर्ण अहसास कि यह सामर्थ लोगोस अर्थात पूर्व अस्तित्व वाले पुत्र अर्थात परमेश्वर पुत्र के द्वारा व्यक्त की गई थी, जो बाद में देहधारी हुआ केवल यूहन्ना के लेखों में ही सामने आता है,* जिससे नया नियम पूरा हुआ था। इसकी झलक इस प्रकार मिलती है:

सुसमाचार के मरकुस के वृत्तांत में हम यीशु को यह कहते हुए सुनते हैं कि यह सृष्टि *परमेश्वर ने बनाई* है (मरकुस 10:6; लूका 13:19)। कलीसिया के आरम्भिक दिनों में चेले परमेश्वर को सब वस्तुओं के सृष्टिकर्त्ता के रूप में स्वीकार करते थे (प्रेरितों 4:24)। 1 कुरिन्थियों लिखते हुए, पौलुस ने परमेश्वर पिता की, ''जिसकी ओर से सब वस्तुएं हैं'' और ''यीशु मसीह'' की बात की ''जिसके द्वारा सब वस्तुएं हुईं'' (1 कुरिन्थियों 8:6)। यहां पौलुस सृष्टि की रचना के कार्य में पिता और पुत्र का सम्बन्ध जोड़ रहा था। उसने पुत्र को *लोगोस* (वचन) से नहीं जोड़ा। रोमियों की पत्री में पौलुस ने स्तुति करते हुए व्यक्त किया कि परमेश्वर और केवल परमेश्वर से ही सब वस्तुएं हैं (रोमियों 11:36क)। बाद में, इफिसियों की पत्री ''सब के सृजनहार परमेश्वर'' (इफिसियों 3:9ख) की बात करती है। कुलुस्सियों की पत्री में पुत्र को परमेश्वर के स्वरूप में बताया गया है। वह पहलौठा है अर्थात सृष्टि की रचना से पहले था, उसे इस पर अधिकार है, और वह इसे स्थिर रखता है। कुलुस्सियों 1:15-17क कहता है:

> वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं। और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।

यह पद सृष्टि में परमेश्वर के पुत्र के व्यक्तित्व, स्थान और भूमिका का स्पष्ट चित्रण करने के लिए बहुत ऊंचा चला जाता है। यहां हमें परमेश्वर की दिखाई गई सामर्थ की एक सांस लेती तस्वीर मिलती है। और गहराई वाले पदों में, हम पाते हैं कि सृष्टि की रचना परमेश्वर की आज्ञा से उसके पुत्र के द्वारा हुई, जिसका शक्तिशाली वचन सब वस्तुओं को स्थिर रखता है:

> पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें करके। इन दिनों के अन्त में हमसे पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है। वह उसकी महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से सम्भालता है: वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिमन के दहिने जा बैठा (इब्रानियों 1:1-3)।
>
> विश्वास ही से हम जान जाते हैं, कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह नहीं, कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो (इब्रानियों 11:3)।
>
> वे तो जान बूझकर यह भूल गए, कि परमेश्वर के वचन के द्वारा आकाश प्राचीन

काल से वर्तमान है और पृथ्वी भी जल में से बनी और जल में स्थिर है (2 पतरस 3:5)।

इन पदों में यूहन्ना के सुसमाचार में मिलने वाली लोगोस की धारणा को पढ़ना अच्छा लगता है। आखिर, हम आम तौर पर नया नियम पढ़ने के लिए सबसे *पहले* यूहन्ना के सुसमाचार को ही तो पढ़ते हैं। परन्तु, हमें याद रखना चाहिए कि कालानुक्रम के अनुसार, *यूहन्ना की पुस्तकें नये नियम की अन्तिम पुस्तकें हैं।*

इसका अर्थ यह है कि नये नियम के अन्त के निकट तक यूहन्ना ने यह भयदायक ऐलान नहीं किया था कि परमेश्वर का सृष्टि का काम सब के सामने प्रकट कर दिया गया है। *लोगोस*/वचन पूर्व अस्तित्व वाले पुत्र अर्थात परमेश्वर पुत्र को जो बाद में देहधारी हुआ, परमेश्वर पिता की सामर्थी शक्ति के रूप में दिखाया गया था। *यह* लोगोस/वचन *उस सृष्टि को अस्तित्व में लाया जो पहले नहीं थी; हमारी समझ और ज्ञान से परे परमेश्वर की बुद्धि और शक्ति का सम्पूर्ण प्रदर्शन था।*

पुराने नियम की शिक्षा

पुराने नियम को देखें तो हम बहुत ही सौभाग्यशाली लोग हैं। हमारे लिए पर्दा हटा दिया गया है। अब हम पुराने नियम की बहुत सी आयतों की सच्चाइयों को समझ सकते हैं, जो उन आरम्भिक पाठकों के लिए या तो स्पष्ट नहीं थीं या धुंधली सी दिखाई देती थीं।[7] यह सब नये नियम के अतिरिक्त प्रकाशन के प्रकाश से सम्भव हो पाया है। इसमें हमें पुराने नियम की बहुत सी भविष्यवाणियों की आयतों की व्याख्या इस प्रकार मिलती है कि प्राचीन समय के इब्रानी लोग उन्हें नहीं समझते थे।

जब परमेश्वर की सृजनात्मक शक्ति की बात आती है, तो पुराना नियम एक होकर और बड़ी गहराई से बात करता है। भजन संहिता में, परमेश्वर की स्तुति उसके सृजनात्मक कार्य के लिए एक अनन्त जीव के रूप में की गई है (भजन 90:2; 102:25-27)। भविष्यवाणी के साहित्य में परमेश्वर को श्रेष्ठतर सृष्टिकर्त्ता के रूप में वर्णित किया गया है जो अकेला ही इस पर शासन करता है और सारी मनुष्य जाति सहित अपनी सृष्टि में लगा हुआ है (यशायाह 40:21-26; 44:24; 45:12; यिर्मयाह 10:16)।

सृष्टिकर्त्ता की पुराने नियम की याहवेह की धारणा महिमा से भरी हुई है। परमेश्वर सर्वव्यापी और अपनी सृष्टि विशेषकर अपनी मानवीय सृष्टि के प्रति दिलचस्पी रखने के साथ-साथ सर्वशक्तिमान है, सर्वश्रेष्ठ है, सबसे ऊपर है। क्या उत्पत्ति 1; 2 में सृष्टि के वर्णन को पढ़ते हुए परमेश्वर के सृजनात्मक कार्य की इन अभिव्यक्तियों को ऊंचा करना न्यायसंगत है? निस्संदेह।

उत्पत्ति की पुस्तक का आरम्भ इन शब्दों से होता है कि परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की थी। स्पष्टत: यह वाक्य एक छतरी की तरह है जो सब कुछ ढक लेता है। जब परमेश्वर का आत्मा पानी के ऊपर खालीपन और अंधेरे में मंडराता था, तो

परमेश्वर के पहले कार्य के रूप में प्रकाश और (क्रम) बनाए गए। सृष्टि की रचना का वृत्तांत तब तक जारी रहता है जब तक हम पर परमेश्वर के यह कहने से साफ नहीं हो जाता, ''हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं ...'' (उत्पत्ति 1:26, 27)। इस वृत्तांत का सार तथा विस्तार उत्पत्ति 2:4-25 में मिलता है, जबकि परमेश्वर की मानवीय सृष्टि की रचना का विस्तार उत्पत्ति 2:7, 21, 22 में मिलता है।

हमें यह नहीं मानना चाहिए कि जैसे हम जानते हैं वैसे उत्पत्ति की पुस्तक लिखते समय मूसा भी सृष्टि की सारी प्रक्रिया को जानता होगा। मूसा ने केवल वही लिखा जो उस पर प्रकट किया गया था। क्या उस पर यह प्रकट किया गया था कि सृष्टि की रचना में परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर आत्मा शामिल थे? उत्पत्ति 1:1, 2 में परमेश्वर (*इलोहीम*) और परमेश्वर के आत्मा (*रूआह इलोहीम*) का विशेष उल्लेख किया गया है। दूसरे वृत्तांत हमें बताते हैं कि सृष्टि की रचना में परमेश्वर के आत्मा का योगदान था (अय्यूब 33:4; भजन 104:30)। आइए परमेश्वरत्व की मूसा की धारणा को और गहराई से समझने के लिए तीन प्रश्न देखते हैं।

पहला प्रश्न यह है कि ''क्या परमेश्वर के लिए बहुवचन संज्ञा *इलोहीम* के इस्तेमाल में मूसा ने बहुईश्वरवाद को देखा?'' उत्तर है ''नहीं।'' मूसा ने ही शिमा में सब इस्राएलियों के लिए विश्वास के आधार को व्यक्त किया था: ''हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है'' (व्यवस्थाविवरण 6:4)। इस पुष्टि से तस्वीर बिल्कुल साफ़ है कि यद्यपि मूसा ने परमेश्वर के नाम के लिए बहुवचन रूप का इस्तेमाल किया, परन्तु वह लिख रहा था कि परमेश्वर वास्तव में *एक* ही है। फिर, उत्पत्ति की पुस्तक में एकवचन क्रिया *बरा* का प्रयोग किया गया जिसका अर्थ परमेश्वर के सृजनात्मक कार्य का वर्णन करने के लिए ''उसने बनाया'' है। यह विचार विलक्षणता को दिखाता है।

दूसरा प्रश्न है ''क्या मूसा ने 'हम मनुष्यों को अपने स्वरूप के अनुसार और अपनी समानता में बनाया' वाक्य में बहुवचन सर्वनाम रूपों का इस्तेमाल किया?'' हम देख चुके हैं कि मूसा एक ही परमेश्वर में विश्वास रखता था, परन्तु प्रश्न उसके इन बहुवचन सर्वनामों के इस्तेमाल के सम्बन्ध में है। निश्चय ही, यहां हम इस बात से उलझ रहे हैं कि धर्म शास्त्र की समझ क्या है, न कि इससे कि यह क्या कहता है। सम्भवत:, मूसा प्रकाशन और भाषा के दायरे में रहकर परमेश्वर के स्वभाव की श्रेष्ठता के विषय में बता रहा था।

तीसरा प्रश्न है कि ''क्या मूसा ने, आत्मा की प्रेरणा प्राप्त उन अन्य लेखकों की तरह जिनका उल्लेख हमने किया है, वास्तव में उससे अधिक कहा जितना उसने महसूस किया?'' उत्तर है, ''हां।'' यद्यपि इस बात का कोई संकेत नहीं है कि परमेश्वरत्व में तीन व्यक्तियों की धारणा मूसा की हो, यह तो बाद के प्रकाशन के साथ मेल खाता है कि सार में परमेश्वर को एक और व्यक्तियों में तीन के रूप में देखा जाए। हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि परमेश्वर की परिपूर्णता का प्रकाशन उत्पत्ति 1:26 के बहुवचन सर्वनामों में देखा जाता है। वास्तव में, इसके विपरीत नहीं हो सकता।[8]

सार यह है कि परमेश्वर की परिपूर्णता संसार की सृष्टि में लगी हुई थी। अर्थात इसमें

परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र (जो देहधारी होने से पहले *लोगोस था*) और परमेश्वर आत्मा लगे हुए थे।

पाद टिप्पणियां

[1]मत्ती, मरकुस और लूका को सिनोप्टिक गॉस्पल्स अर्थात समानांतर सुसमाचारों के रूप में जाना जाता है, क्योंकि उनमें यीशु मसीह के जीवन तथा सेवकाई की एक जैसी बातें होने के कारण। [2]*En arche* = ''In [the] beginning'' अर्थात ''आदि में।'' [3]*Bre'shith* = ''In [the] beginning'' अर्थात ''आदि में।'' [4]''वचन'' के लिए यूनानी शब्द *लोगोस* है। [5]कर्म कारक के साथ प्रयोग करने पर, *Pros* का एक प्रमुख अर्थ मिलता है, ''से निकलता'' या ''सम्बन्ध।'' इस अंश में *Pros ton theon* है जिसका अर्थ है ''परमेश्वर के साथ।'' [6]''प्राचीन समय में दाऊद या उसके किसी उत्तराधिकारी के लिए से बढ़कर पूरे अर्थ में सम्भव था, इस मसायाह को केवल परमेश्वर के पुत्र के रूप में ही नहीं (आयत 5) बल्कि वास्तव में परमेश्वर के रूप में भी सम्बोधित किया जा सकता है, ...'' (एफ. एफ. ब्रूस, *द ऐपिस्टल टू द हिब्रूज़* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशि.: Wm. B. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964], 20)। [7]पृष्ठ 117 पर ''क्या दूसरों ने यीशु को परमेश्वर के रूप में देखा?'' का अतिरिक्त लेख देखिए। [8]यहां हमें साथी *na'aseh* मिलता है जिसका अर्थ ''आओ बनाएं'' है। इब्रानी भाषा में यह व्याकरणीय रूप प्रयास या ज़ोर देने की बात को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। इस संदर्भ में, यह परमेश्वर पिता का परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर आत्मा से गम्भीर और अधिकारपूर्ण निवेदन है कि वे मानवीय जीवों की अपने स्वरूप में रचना करने के लिए योगदान दें।

लोगोस *शब्द*

यूहन्ना ने *लोगोस* शब्द का इस्तेमाल क्यों किया, और इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि उसने इसका अर्थ इतने संक्षेप में क्यों बताया? नये नियम में इस्तेमाल होने से पहले भी *लोगोस* शब्द का अर्थ बहुत धनी था। *लोगोस* में पाई जाने वाली धारणाएं विशेष रूप से यूनानी दार्शनिकों को आकर्षित करती थीं, विशेषतया स्तोइकियों को।[1] स्तोइकी मत के एक प्रारम्भिक विचारक इफिसुस वासी हेराक्लिटुस ने भौतिक विज्ञान में *लोगोस* को प्रकृति के नियम के रूप में देखा। सदियों बाद (लगभग 300 ई. पू.) कुप्रुस का ज़ीनो स्तोइकी मत का स्वीकृत संस्थापक बन गया। एथेन्स में अपने स्कूल में, उसने *लोगोस* को सृष्टि में कारण के रूप में स्पष्ट किया जिससे सब वस्तुओं को उनका क्रम, आकार और सामंजस्य मिला। ईश्वर पर उसके विश्वास ने इस *लोगोस* को रचनात्मक आग से मिला दिया जिसे कभी-कभी *pneuma* (आत्मा) कहा जाता है। इस प्रकार स्तोइकियों ने प्रकृति में *लोगोस* को क्रम व तर्क के रूप में; अभिव्यक्ति में कारण और शब्द के रूप में; थियोलोजी में एक तर्कसंगत आत्मा के रूप में देखा, जो सब वस्तुएं उपलब्ध करवाता है और अपने आपको सब वस्तुओं के साथ जोड़ता है।[2]

पहली शताब्दी ईस्वी का संसार मसीहियत के शुरू होने का गवाह था। मसीह में आशा और उद्धार के शुभ समाचार यरूशलेम से लेकर भूमध्य भाग के आस पास सुनाया गया था। शताब्दी के अन्त तक, परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त लोगों ने इस विश्वास का प्रचार कर डाला था। इन लेखों को, परमेश्वर के स्वभाव, उसके कार्य और मनुष्य जाति के लिए उसकी इच्छा को बताने के लिए कोयनि (बोल चाल की) यूनानी भाषा में दिए गए थे।

पहली शताब्दी के पहले भाग में, फिलो के लेखों ने यहूदियों और मसीहियों के थियोलोजिकल विचार में *लोगोस* की धारणाएं शामिल कर दीं। फिलो एक हेलेनवादी यहूदी दार्शनिक और धर्मशास्त्री (थियोलोजियन) था। सिकन्दरिया, मिसर में पहले होने और शिक्षा पाने के कारण, वह पुराने नियम के शास्त्र और यूनानी दर्शन का गूढ़ ज्ञान रखता था, जैसा कि उसके लेखों से स्पष्ट होता है। रूपकात्मक और यूनानी दर्शन के सिद्धांतों का इस्तेमाल करके पुराने नियम की उसकी पुनर्व्याख्या का अपने समय प्रभाव था जो आधुनिक समय तक भी है। उसने *लोगोस* को ईश्वरीय निर्देशन के रूप में बताया जो अपने लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए निर्धारित पथ के साथ-साथ इतिहास को मोड़ता है। इस प्रकार *लोगोस* के प्रभावों से कॉसमॉस (संसार) पर और अन्ततः मनुष्य जाति के भविष्य पर प्रभाव पड़ता है।

पाद टिप्पणियां

[1]प्रेरितों 17:18 में स्तोइकियों और इपिकुरियों का उल्लेख है। [2]पॉल एडवर्ड्स, सं. इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ फिलोसफी (न्यू यॉर्क मैक्मिलन कं., 1967), s.v. फिलिप्प पी. हैली द्वारा ''स्टोइसिज़्म'' एण्ड ''ज़ीनो ऑफ़ साइटियुस''।